



THE STUDY
By Manikant Singh



भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था

चर्चा में क्यों ?

- ❖ एक सहयोगी मॉडल रचनात्मक अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने और संस्कृति के आर्थिक योगदान को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

रचनात्मक अर्थव्यवस्था क्या है?

- ❖ 'रचनात्मक अर्थव्यवस्था सबसे युवा और सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है, जिसमें अद्वितीय चुनौतियाँ हैं जिन पर अक्सर सार्वजनिक और निजी निवेशकों का ध्यान नहीं जाता है।'
- ❖ डिजिटल प्लेटफॉर्म और प्रौद्योगिकी ने भारतीय कलाकारों और कारीगरों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने में सक्षम बनाया है, परंतु उन्हें उन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो आर्थिक स्थिरता, बाजार पहुंच, डिजिटल विभाजन, कला जगत में अपराध और संरक्षण से संबंधित हैं।
- ❖ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाला एक सहयोगी मॉडल नवीन प्रौद्योगिकी-आधारित स्टार्ट-अप का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर, मार्गदर्शन, तकनीकी सहायता, बुनियादी ढांचा, निवेशकों तक पहुंच और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करके भारत की सॉफ्ट पावर को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकता है।
- ❖ कला क्षेत्र के आर्थिक महत्व की मान्यता बढ़ रही है क्योंकि यह नौकरियों के निर्माण, आर्थिक विकास, पर्यटन, निर्यात और समग्र सामाजिक विकास में सहायता कर सकता है।

भारत की डिजिटल कला में उछाल को समझना

- ❖ संस्कृति के आर्थिक महत्व को पहचानते हुए, बहुसांस्कृतिक समाजों में समसामयिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए सांस्कृतिक नीतियों और सतत विकास पर यूनेस्को विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया था।
- ❖ सम्मेलन का उद्देश्य, सांस्कृतिक नीतियों के भविष्य के लिए एक दृष्टिकोण साझा करना और सतत विकास के लिए संस्कृति की परिवर्तनकारी शक्ति का लाभ उठाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिबद्धता की पुष्टि करना था।

कलाकारों की चुनौतियाँ एवं स्थिति

- ❖ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और डिजिटल सामग्री निर्माण कलाकारों, लेखकों, फिल्म निर्माताओं, संगीतकारों और अन्य रचनात्मक लोगों को दर्शकों से जुड़ने और उनकी प्रतिभा का मुद्रीकरण करने में सक्षम बनाते हैं।
- ❖ जबकि भारतीय कलाकार और कारीगर पारंपरिक कला रूपों को संरक्षित करने और समकालीन कलाकृतियाँ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उन्हें आर्थिक स्थिरता, बाजार पहुंच और तेजी से बदलते समाज में पारंपरिक कला रूपों के संरक्षण से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- ❖ सरकारी समर्थन, सांस्कृतिक संस्थान और पहल कलाकारों को अपना काम प्रदर्शित करने के लिए वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण कार्यक्रम और अवसर प्रदान करते हैं।
- ❖ हालाँकि, समकालीन कलाकारों को ब्रांड के रूप में बढ़ावा देने और समान प्रतिनिधित्व एवं वित्तीय सहायता सुनिश्चित करने के लिए और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।
- ❖ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में वित्तीय सहायता हेतु कलाकारों के चयन में चुनौतियाँ हैं।
- ❖ चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव प्रतिनिधित्व में असमानता पैदा करता है।
- ❖ यह सहायता प्रदान करने के लिए कोई व्यवस्थित या घूर्णी तंत्र नहीं है और चयन प्रक्रिया अक्सर यादृच्छिक या व्यक्तिपरक मानदंडों पर आधारित होती है। इसलिए, प्रतिभाशाली कलाकार, विशेष रूप से शहर के बाहर के कलाकार, प्रायोजित मंचों से लाभ पाने में असमर्थ हैं।
- ❖ इसके अतिरिक्त, अन्य देशों के विपरीत, समकालीन कलाकारों को ब्रांड के रूप में बढ़ावा देने के लिए निजी या सार्वजनिक संस्थानों द्वारा कोई गंभीर प्रयास नहीं किए जाते हैं।
- ❖ रचनात्मक विचारों वाले कलाकारों और कारीगरों को एक बाज़ार, बाज़ार अनुसंधान, व्यवसाय सुविधा और एक मंच की आवश्यकता होती है।
- ❖ कला जगत के अपराधों में कला चोरी, कॉपीराइट उल्लंघन, जालसाजी, धोखाधड़ी और अवैध तस्करी शामिल हैं।
- ❖ इन अपराधों से निपटने के लिए बढ़े हुए सुरक्षा उपायों, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, जन जागरूकता और प्रमाणीकरण एवं ट्रैकिंग के लिए उन्नत तकनीक की आवश्यकता है।
- ❖ कला जगत में अपराध से निपटने से एक स्वस्थ रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। आपराधिक गतिविधियों के साथ-साथ कला उद्योग के भीतर आपराधिक गतिविधियों को दर्शाने या उनकी खोज करने वाली कलाकृतियाँ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती हैं। मूल कलाकृति को सत्यापित करने के लिए कोई संस्थागत बुनियादी ढांचा, विशेषज्ञता और तकनीक नहीं है।
- ❖ ये अपराध सांस्कृतिक विरासत को प्रभावित करते हैं और वित्तीय नुकसान पहुंचाते हैं तथा सार्वजनिक विश्वास को समाप्त करते हैं।
- ❖ भारतीय कलाकारों का शोषण, कलाकृतियों के माध्यम से संरक्षित बेहिसाब धन और विभिन्न मीडिया माध्यमों से सांस्कृतिक इतिहास के बारे में गलत सूचना का प्रसार केवल इस मुद्दे को जटिल बनाता है।

- ❖ समाधानों में बड़े हुए सुरक्षा उपाय, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, जन जागरूकता और प्रमाणीकरण के लिए उन्नत तकनीक शामिल हैं। अधिग्रहीत कलाकृतियों का नियमित ऑडिट विश्वास बढ़ा सकता है और संग्रह की अखंडता को संरक्षित कर सकता है।
- ❖ सत्यापित पहचान चिह्न के साथ आने वाली और बाहर जाने वाली कलाकृतियों का एक संस्थागत रिकॉर्ड आवश्यक है।

एक व्यावहारिक समाधान

- ❖ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाला एक सहयोगी मॉडल रचनात्मक अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने और संस्कृति के आर्थिक योगदान को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी समाधान है।
- ❖ आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए, क्षमता-निर्माण केंद्र स्थापित करके भारत की सॉफ्ट पावर को प्रोत्साहित करना एक समाधान हो सकता है; इससे कला और शिल्प क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी-आधारित स्टार्ट-अप का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में मदद मिलेगी, जो मार्गदर्शन, तकनीकी सहायता, बुनियादी ढांचा, निवेशकों तक पहुंच और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करेगा।
- ❖ कलाकारों की जरूरतों को प्रशिक्षण, व्यावसायिक विकास, बाजार पहुंच और बड़े समुदायों और नेटवर्क में भागीदारी के माध्यम से पूरा किया जाना चाहिए। एक सुविधा केंद्र कलाकारों और कारीगरों के लिए ज्ञान साझा करने, आर्थिक सशक्तिकरण और स्थायी आजीविका समाधान को बढ़ावा देने में मदद करेगा।
- ❖ डेटा एनालिटिक्स का उपयोग रचनात्मक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए किया जाना चाहिए जो एक स्थायी दुनिया में योगदान देता है।
- ❖ निजी खिलाड़ियों के साथ सरकार कलाकारों को सशक्त बना सकती है, उद्योग के अंतराल को पाटने में मदद कर सकती है तथा नवाचार और उद्यमिता के लिए समर्थन, संसाधन और अवसर प्रदान करके रचनात्मक अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में योगदान कर सकती है।
- ❖ इसके अतिरिक्त, मौजूदा संस्थानों को कलाकारों की विभिन्न आवश्यकताओं; जैसे- प्रशिक्षण, व्यावसायिक विकास, सामग्री समर्थन, बाजारों तक पहुंच, सार्वजनिक मान्यता तथा बड़े समुदायों और नेटवर्क में भागीदारी को संबोधित करना चाहिए।
- ❖ एक सुविधा तंत्र को व्यक्तिगत कलाकारों और रचनात्मक उद्यमियों के लिए ज्ञान साझा करने, नेटवर्किंग और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने, व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने, नवीन परियोजनाओं को विकसित करने और उन्हें वैश्विक विपणन प्लेटफार्मों, उपकरणों और प्रथाओं से जोड़ने पर ध्यान केंद्रित करके काम करना चाहिए।
- ❖ केंद्र को सहभागी मॉडल के माध्यम से कलाकारों और कारीगरों के लिए स्थायी आजीविका समाधान प्रदान करने के लिए एक मंच भी होना चाहिए, जो व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र में उनकी भागीदारी को बढ़ाने के लिए नवीनतम आईसीटी (ICT) उपकरणों का लाभ उठाता है।

- ❖ यह नए डेटा का भी समय है जो वैश्विक स्तर पर उभरते रुझानों पर प्रकाश डालता है और साथ ही एक टिकाऊ दुनिया में योगदान देने वाले रचनात्मक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत सिफारिशों को आगे बढ़ाता है।
- ❖ भारत को कला, संस्कृति और रचनात्मक अर्थव्यवस्था का आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व तथा चुनौतियों का समाधान करते हुए समग्र रूप से कलाकारों एवं कारीगरों की संवृद्धि और विकास का समर्थन करना चाहिए।

